डी.एल.एड. - प्रथम वर्ष

ज्ञान, शिक्षाक्रम और शिक्षणशास्त्र

(प्रश्न पत्र - प्रथम)

भाग–1

1. विषय प्रवेश

अपनी स्कूली शिक्षा पर विचार, आदर्शों को पढ़ाना, अध्ययन सामग्री, तात्तो–चान, खिड़की के पास खड़ी नन्हीं लड़की, हेड मास्टर साहब, तोमोए में पठन–पाठन, खेती–बाड़ी के शिक्षक, खुले में रसोई, अध्ययन सामग्री –2 दिवास्वप्न, प्रयोग का आरम्भ, ज्ञान व शिक्षा की एक झलक, हम क्या पढ़ते हैं और क्यों, जो पढ़ाते हैं उसमें ज्ञान का स्थान।

2. ज्ञान के प्रकार

आम बोलचाल की भाषा में ''ज्ञान'' शब्द और उसके पीछे अवधारणा, ज्ञान के प्रकार, कौशल या व्यवहारिक ज्ञान, परिचायात्मक ज्ञान, तथ्यात्मक ज्ञान, कौशलात्मक, परिचयात्मक ज्ञान और वर्णनात्मक ज्ञान में अंतर्सम्बंध, कौशलात्मक और तथ्यात्मक ज्ञान का संबंध, कौशलात्मक को तथ्यात्मक ज्ञान में बदलने की संभावना, कौशलात्मक के लिए तथ्यात्मक ज्ञान की आवश्यकता, कौशलात्मक और परिचयात्मक ज्ञान में संबंध, परिचयात्मक ज्ञान को तथ्यात्मक ज्ञान में बदलना, ज्ञान के प्रकारों पर विमर्श का शिक्षा से सम्बन्ध।

भाग–2

3. ज्ञान और प्रमाण

ज्ञान, शिक्षा और ज्ञान, ज्ञान और प्रमाण, प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान , शब्द

4. ज्ञान की शर्ते

पाश्चात्य दार्शनिकों के मतों का सरल परिचय, प्लेटो, देकार्त, जॉन लॉक, बर्कले, कांट, ज्ञान की शर्तें

भाग–3

5. ज्ञान के स्वरूप

ज्ञान को स्वरूपों में वर्गीकृत करने का आधार, गणित, विज्ञान,सामाजिक, विज्ञान, इतिहास, नैतिक शास्त्र, सौन्दर्य बोध, दर्शन, भाषा और कौशल, भाषा, कौशल, विद्यालय के विनय और ज्ञान के स्वरूप

भाग–4

6. ज्ञान और शिक्षाक्रम

भूमिका, शिक्षाक्रम की जरूरत, शिक्षाक्रम की अवधारणा, पाठ्यक्रम की अवधारणा, शिक्षाक्रम निर्माण की समस्याएँ, शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षाक्रम के चुनाव के आधार, सामाजिक आधार, मनोवैज्ञानिक आधार, ज्ञान मीमांसकीय आधार

डी.एल.एड. - प्रथम वर्ष

प्रश्न पत्र – द्वितीय

बाल विकास और सीखना

भाग–1

1. बच्चों और बचपन के बारे में हमारी धारणाओं की समीक्षा

बच्चे असफल कैसे होते हैं, समरहिल का विचार, अन्य संदर्भ, गीजू भाई, गुरूदेव रविन्द्र नाथ टैगोर, अनारको के आठ दिन, एस्ट्रिक लिंकगन, तेल्सुको कुरोयानागी

2. बाल विकास परिचय

बाल विकास की अवधारणा, विकास और वृद्धि, विकास की विभिन्न अवस्थाएँ, शारीरिक, संज्ञानात्मक और सामाजिक तथा भावनात्मक प्रक्रियाएँ, विकास को प्रभावित करने वाले बिंदु , बालविकास की सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, पारिवारिक संरचना और परस्पर संबंध

भाग–2

3. विकास के पहलू शारीरिक व गत्यात्मक विकास

विकास के सिद्धान्त, शरीर के आकार में वृद्धि, संज्ञानात्मक बदलाव, क्रियात्मक कौशलों का विकास, विकास की गति में वैयक्तिक भिन्नताएँ, विकास को प्रभावित करने वाले तत्व, सामाजिक संवेगात्मक एवं नैतिक विकास, प्रारंभिक बाल्यावस्था, किशोरावस्था, नैतिक विकास

4. सीखना एवं संज्ञान का विकास

क्या सीखना दोहराना है, सीखने के तीन मॉडल, सीखने के रचनावादी नज़रिए – संरचनावदी दृष्टिकोण, रचनावाद क्या है, अनौपचारिक सीखने के लक्षण, सारांश, संज्ञानात्मक विकास, पियाजे और शिक्षा (Piaget and education)

भाग–3

5. खेल तथा विकास में खेल का महत्व

खेल क्या है, खेल का विकास पर प्रभाव, खेल का मनोविश्लेषणात्मक दृष्टिकोण, खेलों के प्रकार,, खेल को प्रभावित करने वाले कारक, पियाजे का संरचना वादी दृष्टिकोण और खेल, वाइगोत्स्की ढाँचे मे खेल, खेल में पालनकर्ता की भूमिका, खेल में शिक्षक की भूमिका

भाग–4

6. विशेष आवश्यकता वाले बच्चे

विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों से अभिप्राय, सामान्य कार्यशीलता में निर्णायक क्षेत्र, क्षति, अपंगता एवं क्षमता, अपंग व्यक्तियों के प्रति हमारी मान्यताएँ एवं अभिवृत्तियाँ, अशिक्षित बनाम अशिक्षणीय, विभिन्न प्रकार के अनुभव एवं उनकी प्रकृति, बच्चे पर अपंगता का प्रभाव, मानसिक अपंगता

डी.एल.एड. - प्रथम वर्ष

प्रश्न पत्र – तृतीय

समुदाय एवं शिक्षा

भाग–1

1 समाज में असमानता व भेदभाव (जाति, लिंग, व धर्म के आधार पर)

प्रायोगिक : किसी भी स्कूली कक्षा में उपलब्ध विविधता का दस्तावेजीकरण और उससे शिक्षणकार्य में क्या समस्याएं होंगी व क्या फायदे होंगे, किस तरह कि विविधताएं हैं, क्षमता, रूचि, जाति, धर्म, भाषा, लिंग, उम्र, आवास, वर्ग, शारीरिक बनावट, कुशलता आदि – इनका कक्षा में तथा, सीखने में क्या उपयोग है, यह समझना। समाज में असमानता व भेदभाव, अवसर, वंचना, बहिष्कार व शोषण, वर्ण एवं जाति, लिंग भेद की अवधारणा – जन्मजात व समाज, निर्मित अंतर लिंग के आधार पर भेदभाव, जातिगत आधार पर भेदभाव, आदिवासी समाज से तुलना।

भाग–2

संवैधानिक उद्देश्य व असमानता व भेदभाव

उद्देशिका का अध्ययन व मौलिक अधिकार, समाज में शिक्षा की भूमिका व महत्व, विकास स्वतंत्रता एवं अवसर, शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन, प्रावधान, उपयोग एवं अनिवार्यता, शिक्षा का लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में भागीदारी पर प्रभाव, शिक्षा एवं विषमता, भेदभाव एवं असमानता

असमानता का शिक्षा पर प्रभाव

पलायनः जीविका के लिए पलायन कौन करते है कब व, किस प्रकार करते हैं – बच्चों व उनकी शिक्षा पर उसका प्रभाव, प्रवासी बच्चों के लिए शिक्षा की व्यवस्था, बाल श्रमिकः बालश्रमिकों को शाला कैसे लाएं, विभिन्न, प्रयासों की समीक्षा, बालिकाओं की शिक्षाः के प्रति समुदाय का नजरिया, व्यावहारिक कठिनाईयां व उन्हें दूर करने के प्रयास, दलित शिक्षाः भेदभाव की वास्तविकता, जनजातीय शिक्षाः भाषा व संस्कृति का अलगाव

भाग–3

अंग्रेजी शासन काल में शिक्षा व्यवस्था

भारत में अंग्रेजी शासन काल के दौरान अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था, व देशी व्यवस्था का तुलनात्मक स्वरूप, ब्रिटिश शासन काल में उपनिवेशवाद और प्रभुत्व के सिध्दांत, और शिक्षा देशी शिक्षा व्यवस्था किन लोगों के लिए उपलब्ध थीं, किस तरह की पढ़ाई लिखाई होती थीं, पाठ्यक्रम कैसे निर्धारित होता था मैकॉले मिनिटिस/वुड्स डिस्पेच और उसका विश्लेषण, ब्रिटिश काल में स्कूलों की संख्या और पढ़ने वालों की, संख्या का विश्लेषण।

भाग–4

वैकल्पिक सोच व प्रयोग

टैगोर – मातृभाषा शिक्षण एवं शिक्षा का सांस्कृतिक एवं दार्शनिक पक्ष, महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षाः उत्पादक व श्रम।

शाला के कामकाज में समुदाय की भूमिका

पंचायती राज, पालक समितियों का अनुभव, पालकों से अपेक्षा, पालक क्यों जुड़े।

डी.एल.एड. - प्रथम वर्ष

प्रश्न पत्र – चतुर्थ

कला शिक्षा

भाग–1

कला क्या हैं, कला शिक्षण के उद्देश्य क्या है

कलाशिक्षण क्यों, भौतिक जीवन में सौन्दर्य का समावेश, संवेदनशीलता एवं बंधुत्व सचेतता, आंख की शिक्षा, लावण्य–निर्माण, कला शिक्षण–बच्चों की नजर से, बालकों की सृजनात्मक क्षमता की हत्या, भारत की समकालीन कला, वैश्विक समकालीन कला, प्राथमिक शाला में कला कारीगरी शिक्षा,

प्रायोगिक :– किसी भी स्कूली कक्षा में उपलब्ध विविधता का दस्तावेजीकरण और उससे शिक्षणकार्य में क्या समस्यायें होंगी, व क्या फायदे होंगे

प्रारंभिक अभ्यास

गीत, गीत गाना, अभिनय कला, मूक अभिनय, सवाक अभिनय, अभिनय संबंधी गतिविधियां, एकल अभिनय, सामूहिक अभिनय, चित्र बनाना, चित्र बनाते समय ध्यान में रखने योग्य बातें मूर्ति गढ़ना

भाग–2

कबाड़ से सुन्दर चीजें बनाने का अभ्यास

मेरी अपनी दुनिया, नजर और नजरिया, कौन चित्रकार है, अज्ञान का लोन्दा बनाम स्वाभाविक विकास, प्रकृति, प्रकृति और प्रकृति, असीमित सम्भावनाएं, निर्जीव संसार से परे सौन्दर्य बोध, ओरोगैमी, कुछ जरूरी बातें, संकेत, पानी गेंद आधार, पानी गेंद आधार के अंग फूल, पानी गेंद

बच्चों में चित्रकला का विकास

बच्चों के चित्रों का विकास–क्रम, बच्चों के चित्रों के विकास–क्रम की मुख्य अवस्थाएंकीरम कांटे की अवस्था, साधन से परिचय, स्नायु–उपयोग–प्रधान अवस्था, कीरम कांटों का नामकरण, प्रतीक काल अवस्था, प्रतीक क्या है और कैसे बनते है, बच्चों का रंग–बोध, वास्तविकता परिचय काल, किशोर अवस्था, शिक्षा की बुनियाद कला हो, किशोर अवस्था में कला शिक्षा, प्राथमिक शाला में चित्रकला का शिक्षण

भाग–3

नाटक व कठपुतली

नाटक क्या है, नाटक के प्रकार, नाटक के विभाग, नाटक के पूर्व किये जाने वाले अभ्यास, पात्र बनना और तत्काल संवाद गढ़ना, बाजार, बाजार का संवाद बनाने का अभ्यास करना, नाटकीय भूमिका की तैयारी, नाटक खेलना, बाद का काम, लघुनाटक, नाटक को तैयार करना, पात्रों से परिचय कराना और कहानी कहना, कटपुतलियों के जरिए कहानी कहना, बोर्ड पर बनाए गए चित्र का इस्तेमाल करना, तस्वीरों से कहानी की ओर संकेत करना, अब क्या होगा, नाटकीय प्रस्तुति, हमारा नाटक नाटक से पहले, अब हम आजाद है, बाल संसद, तोताराम, इच्छापूर्ति, खामोश पढ़ाई जारी है, कठपुतलियां और सहायक वस्तुएं बनाना, ऊंगली पर चेहरा, मुट्ठी पर चेहरा, उंगली पर चढ़ायी जाने वाली पोंगली की पुतली, स्पंज पुतली, ओरीगामी पुतली, मोजे की पुतली, पुतलियों का उपयोग, हां और ना वाली पुतलियां, अनुमान लगाने वाले खेल, डंडी वाली पुतलियों के साथ कहानी कहना, पाठ्यपुस्तक का सजीव बनाना, परिस्तिथि से संवाद तक, डॉक्टर के पास जाना, पुतलियों का वार्तालाप

भाग–4

भारतीय कला – लोक कला व व्यवसायिक कला

लोककला, लोककला क्या है, लोक कलाओं का उद्‌गम, विभिन्न प्रदेशों की लोक कलाएं, लोक कलाओं के प्रकार, लोक कलाओं के उदाहरण, गुफाचित्र भीम बेटका (म.प्र.), अजंता गुफाचित्र, वारली चित्रकला, पट्‌टचित्र देखावा, कलमकारी चित्र, मधुबनी चित्रशैली, भारतीय चित्रकार, अवनीन्द्रनाथ टैगोर, रवीन्द्रनाथ टैगोर, जामिनी रॉय, व्यावसायिक कला

रिपोर्ट तैयार करना

रिपोर्ट क्या है, रिपोर्ट लेखन का महत्व, रिपोर्ट लेखन से लाभ, अच्छी रिपोर्ट के प्रमुख तत्व

प्रोजेक्ट :– अपनी कक्ष व भाला को साफ व सुन्दर बनाना, खुद से अन्य छात्र–छात्राओं की मदद से।

डी.एल.एड. - प्रथम वर्ष

प्रश्न पत्र – पंचम

गणित एवं गणित शिक्षण

भाग–1

गणित शिक्षण क्यों और कैसे ?

दैनिक जीवन में गणित की भूमिका, गणित से डर

बच्चे कैसे सिखते हैं ?

बच्चे किसी अनुभव या गतिविधि से सीखते हैं, बच्चे अनुभव से सीखते हैं, बच्चों की गणित सीखने की क्षमता पर चर्चा करें, बच्चे अपने ही तरीकों से सीखते हैं, गणित की भाषा बोलना, अपनी काबिलियत पर भरोसा : सीखने में मददगार होती है, विकास लगातार जारी रहता है, प्याजे के संज्ञानात्मक विकास की अवस्था, हर बच्चा दूसरों से अलग होता है

भाग–2

हम कब कहेंगे बच्चे गिनना सीख गए ?

गिनती करने का मतलब, संख्या पूर्व अवधारणाओं का विकास, संख्या प्रणाली, स्थानीय मान

संक्रियाएं (जोड़ना, घटाना, गुणा एवं भाग करना)

जोड़ का मतलब समझाना, घटाने की समझ का विकास, जोड़ने व घटाने का सम्बन्ध, गुणा की प्रक्रिया, पहाड़े बनाना बनाम तोतारटन्त, गुणा का ऐल्गोरिद्म, भाग का मतलब

भाग–3

गणित सिखाने में खेल की भूमिका तथा सीखने के उपकरण

खेल–खेल में सीखना, मैजिक स्क्वायर, पहेलियां, कविता, सहायक सामग्री

भिन्न

भिन्न और उसकी समझ, भिन्न की किस्में, भिन्नों का प्रतीकन, भिन्नों का क्रमण

आकृति एवं स्थान संबंधी अवधारणाएं

बन्द आकृतियां, समतल सतह, त्रिविमिय (ठोस) आकृतियां, रेखाएं (सीधी व वक्र)

भाग–4

आंकड़ों का निरूपण एवं मापन

आंकड़ों का संग्रहण, आंकड़ों को दर्ज करना, आंकड़ों का प्रस्तुतिकरण, मापन, लम्बाई मापना , धारिता बनाम आयतन, द्रव्यमान, समय का महत्व

गणित का अध्ययन

गणित सीखना, शिक्षण योजना, पाठ की योजना, सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का मूल्यांकन

डी.एल.एड. - प्रथम वर्ष

प्रश्न पत्र - षष्टम

भाषा एवं भाषा शिक्षण

भाषा-1

भाषा किसे कहते हैं ? (भाषा एवं मानव का संबंध)

इंसान की भाषा, भाषा पर्याय, बच्चों की भाषा, जानवरों की भाषा अपना सिर थपथपाना व पेट को मलना, इंसानों की संरचना में भाषा की भूमिका

भाषा विकास के चरण (बच्चों की भाषाई विकास की प्रक्रिया)

भाषा इन्सानों के लिए क्यों ज़रूरी है और इसका, विकास कैसे होता है, भाषा का दूसरा कदम
बच्चों की भाषा सीखने की क्षमता, बच्चों की भाषा सीखने की क्षमता, भाषा एवं ज्ञान, भाषा सिखाना माने क्या भाषा व भाषा शिक्षण, अबूझ पहेली, समाज का ताना बाना और भाषा

भाषा-2

भाषा का सामाजिक एवं राजनैतिक संबंध

बहुभाषिता, साक्षरता, भाषा-शिक्षण एवं बौद्धिक विकास, भारतीय भाषाएँ : विकासशील समाज में पहचान का , माध यम आवश्यक नहीं, भाषा और तौर तरीके, भाषा और पहचान - डेविड क्रिस्टल, भाषाविज्ञान की परिधि में हिन्दी, कौन भाषा, कौन बोली, बच्चों में भाषाई क्षमता एवं उसका विकास, बातें करना (एक भाषायी कौशल), पढ़न ा - अर्थ एवं अर्थ निकालने की प्रक्रिया

भाषा-3

कक्षा में पढ़ना सीखना

बच्चे पढ़ क्यों नहीं पाते, पढ़ना कैसे सिखाया जाए, पढ़ाई पहली कक्षा की , पढ़ने के तरीके

कक्षा में लिखना सीखना

अभिव्यक्ति कल्पना, तर्क एवं क्षमता का विकास लिखना, क्या और कैसे, लिखना सिखाने के अभ्यास, लेखन के ि ववविध प्रकार, लिखने एवं बोलने में संबंध लिखना-बातचीत

भाषा-4

मूल्यांकन

मूल्यांकन क्यों, भाषा में मूल्यांकन क्यों और कैसे, प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों का भाषा सीखने का आकल न, बच्चों में क्षमताओं का विकास आकलन के तरीके, आकलन कैसे हो- कुछ प्रस्तावित गतिविधियाँ, कहा नी पढ़ना